B.A. (Part III) EXAMINATION, 2017

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न-पत्र—आधुनिक हिन्दी-कविता

Time Allowed : Three Hours | Maximum Marks : 100

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

(क) तू पावेगी वर नगर में एक भूखण्ड न्यारा। 3+7=10
शोभा देते अमित जिसमें राजप्रसाद होंगे।
उद्यानों में परम-सुषमा है जहाँ संचिता सी।
छीन लेते सरवर जहाँ वज्र की स्वच्छता हैं॥
तू देखेगी जलद-तन को जा वहीं तद्गता हो।
होंगे लोने नयन उनके ज्योति-उत्कीर्णकारी।
मुद्रा होगी वर-नयन की मूर्ति सी सौम्यता की।
सीधे-साधे वचन उनके सिक्त होंगे सुधा से॥

अथवा

जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति-सी छायी
दुर्दिन में आँसू बनकर
वह आज बरसने आयी!
मेरे क्रन्दन में बजती
क्या वीणा ? जो सुनते हो
धागों में इन आँसू के
निज करुणा-पट बुनते हो।

(ख) जागो फिर एक बार। 3+7=10
प्यार जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें।
अरुण-पंख तरुण-किरण
खड़ी खोलती है द्वार
जागो फिर एक बार।
आँखे अलियों-सी
किस मधु की गलियों में फँसी
बन्द कर पाँखे
पी रही हैं मधु मौन
या सोयी कमल-कोरकों में ?
बन्द हो रहा गुँजार
जागो फिर एक बार।

अथवा

भीगी या रज में सनी अलिनी की यह पाँख।
आलि, खुली किं वा लगी नलिनी की वह आँख ?
बो बोकर कुछ काटते, सो सोकर कुछ काल।
रो रोकर ही हम मरे, खो खोकर स्वत-ताल।

(ग) बन्दूक के कुन्दे से, 3+7=10
हल के हत्थे की छुअन
हमें अब भी अधिक चिकनी लगती
संगीन की धारा से
हल के फाल की चमक
अब भी अधिक शीतल
और हम मान लेते कि उधर भी
मानव मानव था और है।
उधर भी बच्चे किलकते और नारियाँ दुलारती हैं।
उधर भी मेहनत की सूखी रोटी की बरकत
लूट की बोटियों से अधिक है

अथवा

अरे अचानक,
उस बबूल के मूल
हृदय में धारण करने वाली धरती,
की वह काली नंगी छाती
आप्लावित होती
बबूल के पीले आत्म विसर्जित फूलों की वर्षा से।
सहसा सारी भूमि पीत
तरु की आत्मा हलकी पुनीत
मन भी पुनीत, वह भी पुनीत।

(घ) समर्पण का एक ऐसा विचार 3+7=10
जैसा कि कोई फूल होता है।
फूल, वनस्पति की स्वाहा वाणी है
और-प्रार्थना, मनुष्य की।
इसीलिए
प्रति इतिहास हो जाने का नाम नहीं
बल्कि इतिहास से सर्वथा उदासीन होकर
वनस्पति हो जाने का नाम ही प्रार्थना है।

अथवा

गजब ये है कि अपनी मौत की आहट नहीं सुनते,
वो सब के सब परीशाँ हैं वहाँ पर क्या हुआ होगा।
तुम्हारे शहर में ये शोर सुन-सुनकर तो लगता है
कि इन्सानों के जंगल में कोई हाँका हुआ होगा।

2. हरिऔध की काव्यगत विशेषताओं की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

अथवा

प्रसाद की ''पेशोला की प्रतिध्वनि'' कविता की मूल भावना को स्पष्ट कीजिए। 15

3. ''राम की शक्ति पूजा'' भाव सौन्दर्य की दृष्टि से एक अप्रतिम रचना है। इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

अथवा

अज्ञेय की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

4. मुक्ति बोध की ''बबूल'' कविता का मूलभाव उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

अथवा

धर्मवीर भारती प्रेम और सौन्दर्य के ही कवि नहीं है, वे यथार्थ और मानवता बोध से भी युक्त हैं। इस कथन की समीक्षा कीजिए। 15

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए– 7½+7½

(अ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के जीवन एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

(ब) ''राम की शक्ति पूजा'' के कथानक की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(स) नरेश मेहता की सृजन-यात्रा एवं काव्य साधना का परिचय दीजिए।

(द) दुष्यंत कुमार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का उल्लेख कीजिए।

(For Non Collegiate)

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न-पत्र--आधुनिक हिन्दी कविता

Time Allowed : Three Hours Maximum Marks : 100

1. निम्नलिखित पद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) कोई प्यारा-कुसुम कुम्हला गेह में जो पड़ा हो।
तो प्यारे के चरण पर ला डाल देना उसी को।
यों देना ऐ पवन बतला फूल-सी एक बाला।
म्लाना हो हो कमल-पग को चूमना चाहती है॥
जो प्यारे मंजु-उपवन या वाटिका में खड़े हों।
छिद्रों में जा खणित करना वेणु सा कीचकों को।

यों होवेगी सुरति उनको सर्व गोपांगना की।
जो है वंशी-श्रवण रुचि से दीर्घ उत्कण्ठ होती॥ 10

अथवा

अवध को अपनाकर त्याग से,
वन तपोवन-सा प्रभु ने किया।
भरत ने उनके अनुराग से,
भवन में वन का व्रत से लिया!
स्वामी सहित सीता ने
नन्दन माना सघन-गहन कानन भी,
वन उर्मिला वधू ने
किया उन्हीं के हितार्थ निज उपवन भी॥

(ख) पेशोला की उर्मिया हैं शान्त, घनी छाया में -
तट-तरु है चित्रित तरल चित्रसारी में।
झोंपड़े खड़े हैं बने शिल्प ये विषाद के -
दग्ध अवसाद से।
धूसर जलद-खण्ड भटक पड़े हैं,
जैसे विजन अनन्त में
कालिमा बिखरती है सन्ध्या के कलंक-सी,
दुन्दुभि, मृदंग, तूर्य शान्त स्तब्ध मौन है।
फिर भी पुकार-सी है गूंज रही व्योम में-
कौन लेगा भार यह ?
कौन विचलेगा नहीं ? 10

अथवा

"धिक् जीवन को जो पाता ही पाया विरोध,
धिक साधन, जिसके लिए सदा ही किया शोध!
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का न हो सका।
वह एक और मन रहा राम का जो न थका,
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय,
बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युत-गति हतचेतन
राम में जगी स्मृति, हुए सजग पा भाव प्रमन।"

(ग) हमें बल दो, देशवासियों,
क्योंकि तुम बल हो,
ओज दो, जो ओजस् हो,
क्षमा दो, सहिष्णुता दो, तप दो,
हमें ज्योति दो, देशवासियों,
हमें कर्म-कौशल दो,
क्योंकि अभी कुछ नहीं बदला है,
अभी कुछ नहीं बदला है 10

अथवा

उन्हें युद्ध की ही करने दो बात
चाँद की बात हम करें,

सूत्र निकालें गणित जमायें
अज्ञातों को ज्ञात हम करें!!
फिर, उन ज्ञातों से अलग सब अज्ञातों तक
ऊँची नि:श्रायणी लगायें
भव्य सातवें मंजिल के सपनों तक ले जायें।
सोपानों को सपनों तक ले जायें।
सपनों की ऊँची मंजिल पर
जीवन कार्यालय में
करें सुरक्षित भविष्य!!

(घ) कभी वनस्पतियों को
एक कवि की दृष्टि से देखो!
कैसी विशाल कौटुम्बिकता अनुभव होती है!
अमानुषी वन-पर्वतों
निर्जन जंगलों
एकाकी उपत्यकाओं में भी
पत्रलिखी भूषाएँ धारे
सुरम्यवर्णी फूल खोंसे
ये वनस्पतियाँ-
भाषातीत संकीर्तन करतीं
निवेदित, सुगन्ध ही सुगन्ध लिखती है। 10

अथवा

अथवा

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन यह थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।
हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

2. '' 'प्रबोधिनी' कविता भारतेन्दु ने जागरण गीत के रूप में लिखी है।'' इस कथन के आलोक में कविता के संदेश को सोदाहरण बताइये।

अथवा

'पवनदूती प्रसंग' में व्यक्त राधा की विरह व्यथा को सोदाहरण बताइये। 15

3. पठित पदों के आधार पर जयशंकर प्रसाद के काव्य की भावगत एवं कलागत विशेषताओं को सोदाहरण समझाइये।

अथवा

''अज्ञेय मूल रूप से कवि हैं तथा नयी परम्परा का सूत्रपात करने वाले कवि है।'' इस पंक्ति के आलोक में अज्ञेय का मूल्यांकन कीजिए। 15

4. ''मुक्तिबोध की कविता की सबसे बड़ी शक्ति है - लोक परिवेश से गहरी सम्पृक्ति तथा जनजीवन में अगाध विश्वास।'' पठित पदों के आधार पर मुक्तिबोध के काव्य की इस विशेषता को सोदाहरण व्यक्त कीजिए।

अथवा

''दुष्यंत कुमार की गजलों में आम आदमी के प्रति सहानुभूति है।'' सिद्ध कीजिए। 15

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिये- 7½+7½

(i) मैथिलीशरण गुप्त के काव्य के नारी पात्र
(ii) जागो फिर एक बार कविता का मूल भाव
(iii) धर्मवीर भारती के काव्य में व्यक्त प्रेम व्यंजना
(iv) नरेश मेहता की कविता 'सूर्योदय, एक सम्भावना' का मूल भाव।